

AROUND THE WORLD

JAPAN REPORTS FIRST DEATH FROM CORONAVIRUS, ANOTHER AFFECTED

KERALA PATIENT DISCHARGED FROM HOSPITAL

QATAR READY TO RE-ROUTE OIL, GAS CARGOES TO CHINA, SAYS MINISTER

IN INDIA, ALMOST 16,000 UNDER SURVEILLANCE FOR CORONAVIRUS

Trains have been cancelled or their frequencies reduced from Wednesday till March end due to low occupancy.

Many Indians in Iran likely +ve

The Centre on Tuesday declined to confirm that 254 Indians in Iran had tested positive, though it admitted that many Indians had been infected.

LOCKDOWN on 3 nations, int'l flights nixed

Afghanistan, Philippines and Malaysia have been added to the list of nations from which Indians can fly directly to India till the month-end. Meanwhile, AI has suspended all flights between India & Europe/UK. IndiGo and GoAir, too, have cancelled international flights.

Lanka suspends all int'l flights

In view of the rising number of the coronavirus cases globally Sri Lanka on Tuesday suspended all international flights arriving in the country. Sri Lanka so far has 29 confirmed coronavirus cases. The Centre on Tuesday also extended the public

Prosecutor General's Office led by Volodymyr Hutsulyak... The department is accused of creating political crises on behalf of the government...

Demchyna has also resigned to prosecute investigators who arrested them, according to Kash...

After his resignation, he took a sabbatical leave for 14 months...

Health Minister Harsh Vardhan: "15,991 people across the country are under surveillance for coronavirus, 437 people were given treatment and 41 in isolation."

Need to provide private beds and delimiting of various...

1 DAY 242 DEATHS

CHINA'S CORONA CASUALTY

PM Modi personally monitoring situation: India

India must scale up testing: WHO official

Modi rejects call to adjourn Parliament

held a surgery for his cancer... The 67-year-old... The Delhi government...

THE IDEAS PAGE KICKING THE CANCER CAN

DELHI IF BEDS FULL, HOSPITALS MUST SHIFT PATIENTS

CONCLUSION

Emergency personnel collect bodies, Slovakia

India must scale up testing: WHO official

WHO south-east Asia regional director Poonam Khotrpal Singh says the risk is very high even in India and a shift in testing strategy is needed.

Modi rejects call to adjourn Parliament

Taking a dim view of the suggestion to adjourn Parliament, PM Modi Tuesday said MPs should not be seen as abdicating the responsibility.

ANANTHAKRISHNAN'S

TRACKING INDIA'S COVID CASES

Table with 4 columns: State, Total, Confirmed, Recovered. Rows include Maharashtra, Gujarat, Odisha, Tamil Nadu, Bihar, West Bengal.

Emergency personnel collect bodies, Slovakia

Modi rejects call to adjourn Parliament

There is no evidence of community transmission as yet. Progressively we have asked private hospitals to earmark isolation beds. This is to be used.

Modi rejects call to adjourn Parliament

players have shown interest to participate in the efforts," La Agarwal, joint secretary in the health ministry, said.



19

LOCKDOWN

LOCKDOWN

LOCKDOWN

LOCKDOWN

Introduction

This issue of Dastaan-e-Mohalla is truly a special one. The last few months have been challenging, the WHO declared COVID-19 a Pandemic. Since then governments all over the world announced quarantines and lockdown periods that altered everybody's lifestyle. The Kutumb Foundation works with marginalized youth to foster their skills and help empower them using creative methods of teaching. During the initial days of the lockdown period it was challenging to connect with our members, but thanks to technology we were able to reach out to some of our members across various locations and created a remote network for communication. Through this network we kept our members engaged with stay-at-home activities and also provided them with rations, as a majority of our members come from families that run on daily wages. This edition of Dastaan-e-Mohalla is a compilation of stories and experiences from members across all our programs i.e Indradhanush, Qissagadh Active Library, Sports for Change, Goal of Life, Drama-in-Education and Yuva Kendra, and how they coped up with the new stay-at-home and physical distancing lifestyle.

Keep yourself sanitized and maintain distance from others for everyone's safety

Ration Distribution Drive

With support from generous individuals, Azim Premji Foundation, Delhi Storytellers Tribe, and HCL Foundation, we have distributed 2,058 ration kits to marginalised families across Delhi and Noida as part of our ongoing Ration Distribution Drive.



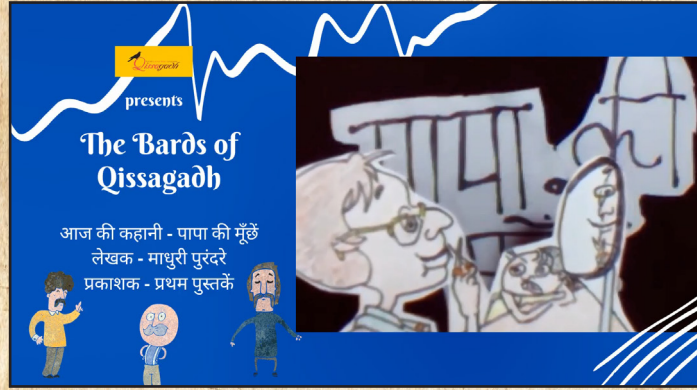
Each kit contained 5 kgs rice, 3 kgs atta, 1 kg dal, 500 gms rajma, 1.5 litres of cooking oil, 2 kgs of potatoes, 2 kgs of onions, 500 gms of salt, 500 gms of sugar, 250 gms of tea, 200 gms of haldi, 200 gms of mirchi, 2 packets of bathing soap, 3 packets of biscuit, 1 toothpaste and 2 packets of laundry soap.





The Bards of Qissagadh

'The Bards of Qissagadh' was launched as a way to share stories during the Pandemic when everyone was staying at home.



परिवर्तन

युगों युगों की थाती में एक नया सवेरा
आया है,
मन क्यों विचलित करता मानव,
कुछ खोकर हमने पाया है ।

प्रकृति की कदर करके देखो,
सब सहज, सरल और सुलभ यहीं है ।
पेड़, पौधे, जंगल, झरने और सब प्राणियों
का वास यहाँ,
धरा की सबसे अनमोल धरोहर यहीं है ।

तन मन क्यों है व्याकुल इतना,
परिवर्तन तो जीवन का आधार है ।
आगे बढ़ना, बढ़ते रहना
ताल मिलाकर चलते रहना,
डर को जीत कर, डटे रहना
यही तो जीने का सार है ।

सृष्टि से केवल लिया ही लिया है अब तक,
उसे लौटाने का समय तो आज आया है ।
भूमण्डल को निर्मल सुन्दर रहने योग्य
बनाने को,
यह मनोबल हमने पाया है ।



आज लेते हैं संकल्प यही,
दम तोड़ती धरती में,
फिर से प्राण जगाना है ।
संपूर्ण जगत के जीवन में,
खुशहाली को लाना है ।
पाना है, पाना है
नवनिर्मित और परिवर्तित
सृष्टि को पाना है ।

- दीपाली मेहरा

पूछ लेना

कैसी हो तुम? पूछ लेना ।
ठीक लगे भी तो, पूछ लेना,
कैसी हो तुम?
अपना कुछ न थोपना उस पर,
सुनते रहना, समझते रहना ।
और अगर,
तुम्हें सुनने में हो न दिलचस्पी,
तो दुत्कार न देना उसको ।
क्योंकि बहुत सी दुत्कारें की होगी,
सहन अब तक उसने ।
कैसी हो तुम?
पूछ लेना ।
ठीक लगे भी तो, पूछ लेना,
कैसी हो तुम?
उसके बोल पर न ध्यान देना,
अटक-अटक वह बोले कुछ,
कारण जानने की कोशिश कर लेना ।
न जान पाओ कुछ अगर,
तो हो तुम उसके पास,
यह भरोसा उसको दिला देना ।
कैसी हो तुम?
पूछ लेना ।
ठीक लगे भी तो, पूछ लेना,
कैसी हो तुम?
हो सकती हैं वह तुमसे कुछ कम,
इससे उसका मनोबल मत घटाना तुम ।

उसकी चिंता कर,
उसे निराशा और तनाव की चिंता से उठा
लेना तुम ।
कैसी हो तुम? पूछ लेना ।
ठीक लगे भी तो, पूछ लेना,
कैसी हो तुम?
तुम्हारे साथ ही उसने, सीखा, पढ़ा और
खेला हैं, पता हो यह तुम्हें शायद कि कुछ
तो हुआ होगा, जिसे उसने किसी से न बाँटा
होगा । अपनी रुचि से पूछ लेना तुम कुछ
उससे, क्या पता, जो किसी को न बताया
हो, वह बता दे तुमसे ।
कैसी हो तुम? पूछ लेना ।
ठीक लगे भी तो,
पूछ लेना,
कैसी हो तुम?
~ सुषमा ।



लॉकडाउन एक ज़िंदगी!

22 मार्च 2020 सुबह की पहली किरण ज़िंदगी की नई शुरूआत। आंख खुलने तक सब कुछ अपनी जगह पर था। आंख खुली तो सब कुछ अपनी जगह पर पाया। फर्क इतना था कि आंख खुलने से पहले सब कुछ पिछली ज़िंदगी के मुताबिक था और आंख खुलने के बाद सब कुछ नई ज़िंदगी के मुताबिक। पिछली ज़िंदगी में जहां हर कोई आज़ाद पंछी की तरह अपने पंख लहराता वहीं नई ज़िंदगी में ये सब महज एक ख़्वाब है। नई ज़िंदगी कैदखाना जहां हर कोई कैदी है। पंख लहराना तो दूर उसे खोल भी नहीं सकते। इसमें उम्र की कोई सीमा नहीं सभी उम्र बराबर शामिल है। छोटा - बड़ा, काला - गोरा सब बराबर। सब कुछ सोच के परे है - लोगों के रोज़गार बंद और वे खुद चारदीवारी में बंद। लोगों का लोगों से मिलना बंद, लोगों की लोगों के लिए मोहब्बत अंत। इन सब के पीछे वज़ह केवल एक है कोरोना वायरस “कोविड - 19” एक महामारी। कोरोना वायरस संगीन महामारी, बेबसी बेकरारी भरपूर लाचारी।

उम्मीद फ़रियाद मदद की आस, जेबें ख़ाली कुछ भी नहीं पास।

वो कहते हैं ना मुश्किल के साथ आसानी है इस दौर में भी यह साबित हुआ। हम लोगों के मुताबिक सब कुछ गलत है मगर जितना गलत है उतना सही भी है। सबसे अहम यह है कि लोगों का मानना जो होता है उसमें हमारा कमाल है मगर नहीं लॉकडाउन ने इसे गलत साबित कर दिया। हमारे या आपके करने से कुछ नहीं होता। जो होता है खुदा की रज़ा से होता है। हम आप तो एक ज़रिया है। जैसे हमारा आपका कहना है कि कमाएंगे नहीं, तो खाएंगे क्या? आज लॉकडाउन में हर कोई घर बैठा है मगर कोई भूखा नहीं। बल्कि लॉकडाउन ने और भी बहुत सबक सिखाए है। हम आप रोजमर्रा की ज़िंदगी में खुद से दूर थे मगर लॉकडाउन की वज़ह से हम खुद को वक़्त देने लगे, खुद को पहचानने लगे, खुद को जानने लगे और सबसे बड़ा हम अपने परिवार को वक़्त देने लग गए और दोबारा साथ हंसने - खेलने लग गए।



मेरी ज़िन्दगी में लॉकडाउन का बहुत बड़ा योगदान है। इसकी वज़ह से मैं वो चीज़ कर पाया जो कभी सोचा ना था जैसे कुटुम्ब फाउंडेशन ने मुझे एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी “राशन वितरण”! राशन वितरण मेरी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी चुनौती रही। ऐसे दौर में उन परिवारों को राशन वितरण करना जिनके पास खाने व अन्य ज़रूरियात को कुछ मौजूद नहीं यह कोई गर्व की बात से कम नहीं। मैं कुटुम्ब का तहदिल से शुक्रगुज़ार हूँ।

सही मायने में ज़िम्मेदारी वो दौलत है जो कमाए नहीं मिलती। राशन वितरण दुखो का इलाज नहीं, बस थोड़ी मदद है।

जैसा कि मौजूदा दौर में “वर्क फ्रॉम होम” चल रहा है ऐसे में हम कैसे पीछे रह सकते हैं। हम भी वर्क फ्रॉम होम का जायज़ा ले रहे हैं। वर्क फ्रॉम होम में सबसे अच्छी चीज़ मुझे “कहानी सुनाना - स्टोरीटेलिंग” मिली जो कि मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं सिवाय “कहानी सुनने” के। शुरुआत में मुझे पहाड़ सा लगा मगर दिन-ब-दिन पेड़ सा लगने लगा। स्टोरीटेलिंग उतना मुश्किल नहीं था जितना कैमरे का सामना करना। मॉडर्न ज़माना - मॉडर्न चलन चलना।

सधन्यवाद!

- इंद्रजीत हल्दर!



मेरा नाम नाम चम्पा आर्य है। मैं कुटुंब में हिंदी क्लास लेती हूँ। लॉकडाउन होने से बहुत लम्बा समय मिला, इतने लम्बे समय से मैं एक जैसा काम कर रही थी वो ही भाग भाग कर सारे काम करना। सुबह जल्दी उठी, बेटी को स्कूल भेजना, पति को ऑफिस भेजना, फिर घर के काम, फिर खुद ऑफिस जाना, फिर घर पर बच्चों को पढ़ाना, काफी टाइम से सब एक जैसा चल रहा था। मैं अपने पति से हमेशा बोलती थी कि मुझे आराम चाहिए जैसे सुबह आराम से उठी, सारे घर के काम आराम से करूँ, पर पता था ऐसे कभी नहीं होने वाला। लॉकडाउन से आराम तो मिला ही मगर आलसी भी हो गई हूँ। सारा दिन घर पर रहना, किसी से मिलना नहीं, कुछ दोस्तों और रिश्तेदारों से बात कर लेती हूँ, सारा दिन हमारे घर में न्यूज़ चलती रहती है और खबरें देख-देख कर और दिमाग खराब हो जाता है। कुछ लोग घर नहीं जा पा रहे और कुछ घर पर बैठ नहीं पा रहे हैं। फिर कुछ नया करने को मिला स्टोरीटेलिंग बनाने को कहा बहुत डर लग रहा था समझ नहीं आ रहा था कैसे करे, कर पाएंगे या नहीं? धीरे धीरे किया और सीख रहे हैं कैसे कैसे करना है। मेरा जब पहला स्टोरीटेलिंग लांच किया मुझे बहुत बहुत खुशी हुई कि मैं भी कर सकती हूँ। स्टोरीटेलिंग करने में मज़ा आया, बहुत कुछ सीखा और एक नया आत्मविश्वास भी आया कि हम इतनी अच्छी स्टोरी भी सुना सकते हैं और सीखा कि लॉकडाउन में आप और नए तरीके से काम कैसे कर सकते हो।

जब पहला लॉकडाउन था तब बहुत मज़ा आया मगर धीरे धीरे देखा कि लोगो को कितनी मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है। सब जगह एक दम सुनसान हो गया था मुझे तो बाहर जाने में बहुत अजीब सा लग रहा था कि पता नहीं क्या हो गया है। टेंशन हो रही थी अगले महीने क्या होगा? सैलरी आएगी या नहीं? घर का रेंट कैसे देंगे? घर का राशन? स्कूल से मेसेज आया कि बच्चों की स्कूल की किताबें ले लो जिससे टेंशन और बढ़ने लगी। हाँ मुझे और मेरे पति को सैलरी टाइम से मिली तो अच्छा लगा इतनी मुसीबत का सामना हमें नहीं करना पड़ा। बहुत से लोगो की नौकरी चली गई। दुनिया में बहुत कुछ हो रहा था और वह देख कर बहुत दुख हुआ। मेरी बेटी बहुत बोर होने लगी कि घर से बाहर नहीं जाना और सारा दिन घर पर रहना, ऑनलाइन पढ़ाई से भी वो बोर हो गई थी। उसको व्यस्त करने के लिए हम लोग भी उसके साथ अलग अलग चीज़ें करने लगे जैसे लूडो, कैरम बोर्ड, आर्ट एंड क्राफ्ट, थोड़ी पढ़ाई, हिंदी और इंग्लिश की कहानियाँ पढ़ना, जो चीज़ें उसके काम की नहीं हैं उसे अलग करना। एक दिन क्या हुआ हमारे करी पत्ते के पौधे में से पत्ते रोज़ कम हो रहे थे मेरी बेटी हमेशा बोलती कि करी पत्ते के पत्ते कम हो रहे हैं। एक दिन हमने सारे पत्ते चेक किए उसमें एक caterpillar थी जो रोज़ हमारे पत्ते खा रही थी। हमने उसकी जीभ देखी वह लाल रंग की थी फिर एक दिन उसने अपने आपको उल्टा कर दिया और ढक लिया। हम उसे रोज़ देखते थे थोड़े दिन बाद वो उड़ गई हमें पता भी नहीं चला मगर उसका कवर वहीं था। उसके बाद हमने वहाँ पर कई caterpillar देखे। मेरी बेटी के लिए यह एक नया अनुभव था। उसने सिर्फ caterpillar का चित्र देखा था और उसे बहुत अच्छा लगा। हमने अपनी बालकनी में कुछ पौधे लगा रखे हैं। जिन्हें मेरी बेटी रोज़ देखती है और रोज़ पानी देती है। जब भी कोई नया पौधा आता है वह बहुत खुश होती है।

लॉकडाउन में मैंने वो रेसिपी बनाई जो वक़्त होते हुए भी मैंने कभी बनाई ही नहीं थी। मैंने जलेबी, गुलाब जामुन, मोमोस, छोले भटूरे, केक, इडली सांभर, बिस्किट केक, पिज़्ज़ा एंड स्माइल्स बनाए। मेरे भटूरे और केक अच्छे नहीं बने। अब थोड़ा-सा शाम को मैं और मेरी बेटी वाँक के लिए जाते हैं वो अपनी साइकिलिंग करती है और मैं वाँक कर लेती हूँ।

- चंपा आर्य



Champa experimented with cooking restaurant style dishes at home.



She also grew some tulsi, chillie and currey leaves plants.

लॉकडाउन का सकारात्मक पहलू

लॉकडाउन एक ऐसी स्थिति है, जो कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के रूप में सामने उभर कर आयी अर्थात् सामाजिक दूरी का पालन करने हेतु हमें अपने घर के अंदर ही रहना है और आवश्यकता पड़ने पर ही बाहर निकलना है। इस स्थिति का प्रभाव सभी लोगों पर सामान और व्यापक रूप से पड़ा। जिसके कारण सभी को अपनी दिनचर्या में काफी बदलाव करना पड़ा। इस प्रकार हमारा जीवन पूरी तरह बदल गया। जिसे हर किसी ने विभिन्न सन्दर्भों में देखा, जाना और समझा। जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, होते हैं, उसी प्रकार लॉकडाउन के भी दो पहलू हैं। इस लेख के द्वारा लॉकडाउन के सकारात्मक पहलुओं को पेश करने का प्रयास किया गया है।

इस स्थिति ने हमें अपने आप को जानने का बेहतर अवसर प्रदान किया और साथ ही वह सब काम करने का भरपूर समय दिया, जो हम समयाभाव के कारण पहले नहीं कर पाते थे। हमने यह भी सीखा कि जीवन की सार्थकता उसे सही प्रकार से जीने में है, न कि दौड़ भाग कर जीवन को काटने में है। इस समय में मानव ने अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के अतिरिक्त अपनी मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक आवश्यकताओं और कर्तव्यों की ओर भी अपना ध्यान केंद्रित किया और अपनी क्षमताओं के अनुरूप जन कल्याण कार्यों में उचित योगदान दिया। किसी भी प्रकार के भेदभाव को भुला कर, जिस प्रकार से लोग एक-दूसरे को सहयोग और सहायता के लिए आगे आए, वह अविस्मरणीय है।

पर्यावरणीय दृष्टि से देखा जाए, तो संपूर्ण वातावरण में एक नवीनता का संचार प्रतीत हुआ जिससे शुद्धता एवं स्वच्छता के आधार पर नदियों का साफ़ कल कल बहता पानी, स्वच्छ आकाश और शुद्ध हवा में सांस लेने का सुखद एहसास प्राप्त हुआ। भारत के कई क्षेत्रों के जल स्रोतों की गुणवत्ता संतोषजनक पायी गयी। साथ ही प्रमुख नदियों जैसे गंगा और यमुना के प्रदूषण स्तर में महत्वपूर्ण सुधार देखने को भी मिला। पंजाब के जालंधर शहर में पहली बार हिमालय की चोटियों के दर्शन हुए और हवा में प्रदूषण की मात्रा कम हुई। इसके अतिरिक्त धरती की सतह पर कम्पन की मात्रा का कम होने, कुछ जंगली जानवरों का निर्भीक होकर विचरण और पक्षियों का कलरव इस बात का संकेत देता है कि यहाँ की प्रत्येक रचना का वातावरण पर पूरा अधिकार है और धरती उनकी भी थाती है।



Air pollution in Delhi, dropped drastically during the lockdown.

सांस्कृतिक स्तर पर भारत की अभिवादन की प्रथा नमस्ते का संपूर्ण विश्व में प्रसार हुआ और सभी ने इसे दिल खोल कर अपनाया क्योंकि सोशल डिस्टन्सिंग रखनी ज़रूरी है। श्रम की महत्ता को बल मिला, जिससे बहुत-सी सुविधाओं का भोग करने वाले लोग अपने सामान्य काम करने के योग्य हुए। सामाजिक दूरी का पालन करते हुए लोगों को अनुशासित होने में मदद मिली। संसार में नैतिकता और आध्यात्मिकता का प्रचलन तेजी से बढ़ा जिससे लोगों में ध्यान करना, बेहतर और सार्थक जीवन जीने की परिकल्पना को बढ़ावा मिला। जनमानस की खर्चीली आदतों पर अंकुश लगा और लोगों को धन, समय एवं ऊर्जा का सही उपयोग ज्ञात हुआ। सरकार और प्रशासन ने जन कल्याण कार्यों में जिस तरह अपनी भूमिका का निर्वहन किया, वह वास्तव में सराहनीय है और इनके द्वारा उठाये गए कदम जनता की सुरक्षा के लिए उचित एवं कारगर है।

- दीपाली मेहरा



Deepali developed her skills of storytelling during the lockdown.

हाल - ए - लॉकडाउन

“शाम मस्तानी - दीवाना शहर” दोनों आज़ाद पंछी सा आसमान में उड़ रहे थे। तभी अचानक आसमान में काले बादल छाने शुरू हुए काले बादल छाते देख पंछियों में हलचल सी मची और.....

लॉकडाउन “हैंसलों की नई उड़ान” ज़िंदगी की नई शुरुआत जहां खुशी कम गम के बादल ज़्यादा छाए हुए हैं और हरसू यही बारिश हो रही है “दिल संभल जा ज़रा”! मगर हाल कुछ ऐसे है मेरे ना तो खुशी है ना ही गम। हवाओं में खलिश - बेदार है हम, और इसकी वजह कोविड - 19 (कोरोना वायरस)! कोरोना वायरस एक ऐसी महामारी जिसने दिलों को दिलों से, धर्मों को धर्मों से, बड़ों को छोटों से, छोटों को बड़ों से जुदा किया। मगर सच ये भी है कि यकीनन मुश्किल के साथ आसानी होती है जैसा की इस बार भी हुआ। लोगों को अपने घरवालों को करीब से जानने को मिला, उनके साथ रोज़मर्रा की ज़िंदगी में जो नहीं हो पाता था ढेर सारा वक्त बिताने को मिला, हंसने - गाने को मिला, एक दूसरे से अपने हाल - चाल जानने को मिला, एक दूसरे का हुनर देखने को मिला, एक - दूजे को एक - दूजे का कंधा (पिलर) बनने को मिला, उनको खूब प्यार करने को मिला, शुद्ध वातावरण मिला और सब में अहम ये कि वक्त ही वक्त मिला जिससे ये सभी चीज़ें अम्ल में आ पाईं और लोगों का यह मानना है कि लॉकडाउन की वजह से कोरोना महामारी ने किया अपना काम मगर ऐसा हरगिज़ नहीं है ये सब कुदरत का खेल है कि हम अब भी संभल जाएं कुदरत को नुकसान ना पहुंचाएं क्योंकि यह यकीनन सच बात है कि (नेचर इस द बेस्ट टीचर)!

हां मैं अपने हाल बयां कर रहा था, लॉकडाउन में अपने अवकाश बयां कर रहा था, हाल तो मैंने बयां कर दिया अब नियमित कार्यक्रम और बयां कर दूं।

मेरा वक्त सुबह की अज़ान व प्रार्थना से शुरू होता है, अव्वल अपने रब का शुक्रिया अदा करता हूं जो हर रोज़ मुझे नींद से जगाकर एक नई ज़िंदगी अता करता है उसके बाद दुनिया का सारा काम अम्ल में लाता हूं। लोगों से दूर हूं - थोड़ा मजबूर हूं, हालात का मारा हूं - हां मैं बेकसूर हूं। देखा जाए तो काम पहले के मुकाबले ज़्यादा भी है और नहीं भी, ज़्यादा से मुराद मुश्किल है। लॉकडाउन से पहले की ज़िंदगी में भी हालात व परेशानियां थीं मगर लॉकडाउन की ज़िंदगी पिछली ज़िन्दगी से पूरी अलग है और इसमें सबसे बड़ी परेशानी “कामों को घर से अम्ल में लाना” है। कहने को तो ये बहुत आसान है “वर्क फ्रॉम होम” मगर मेरे नज़रिए से करने में बहुत मुश्किल। मुश्किल जैसे कभी ये नहीं है तो कभी वो नहीं, कभी इसमें दिक्कत आ रही है तो कभी उसमें दिक्कत आ रही है, कभी नेटवर्क समस्या तो कभी कंप्यूटर व फोन की समस्या। ज़िंदगी उलझी सी नज़र आती है फिर भी वर्क फ्रॉम होम ने बहुत कुछ सिखाया जो कि अब तक सोच से परे था जैसे कभी नहीं सोचा था कि क्लास ऑनलाइन होगी और तो और काम भी ऑनलाइन होंगे, मशीनों को अपना जीवन साथी बनाना होगा, कागज़ - कलम से राबता कम करना होगा आदि। मेरी ज़िंदगी में लॉकडाउन और वर्क फ्रॉम होम दोनों का बड़ा ही योगदान है, इसके दरमियान मैंने अपने काम के साथ - साथ अपने सपनों को भी भरपूर बुनने की कोशिश की और कुछ हद तक कामयाब भी रहा।

जिंदगी की कसौटी में उतार - चढ़ाव बेशक है मगर मुझे एक ग़म बड़ा तड़पाता है वो ये कि प्रिय छात्र - छात्राओं से दूरी। हर वक़्त यही ग़म सताता रहता है कि वापस अब कब मिलेंगे, अक्सर खुदा से यही दुआ होती कि जल्द से जल्द सब कुछ काबू पाए बीमारी से लेकर हालात तक और एक बार फिर अपने प्रिय छात्र - छात्राओं के साथ हंसने - बोलने का मौका मिले और जिंदगी की नए सिरे से शुरुआत हो।

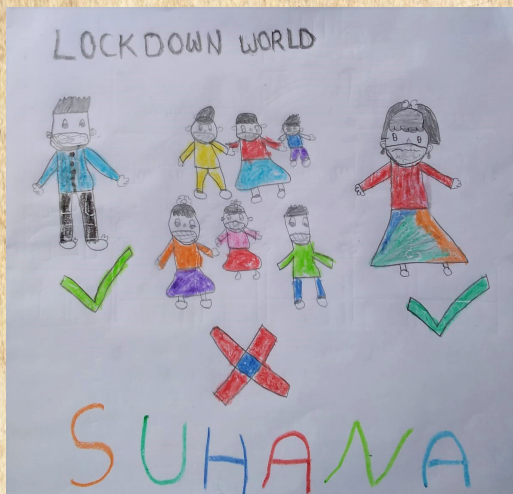
सधन्यवाद।

मु० तौसिफ अहमद।



Indradhanush Lockdown Dairies

Our students shared their thoughts during the lockdown through art and poetry.



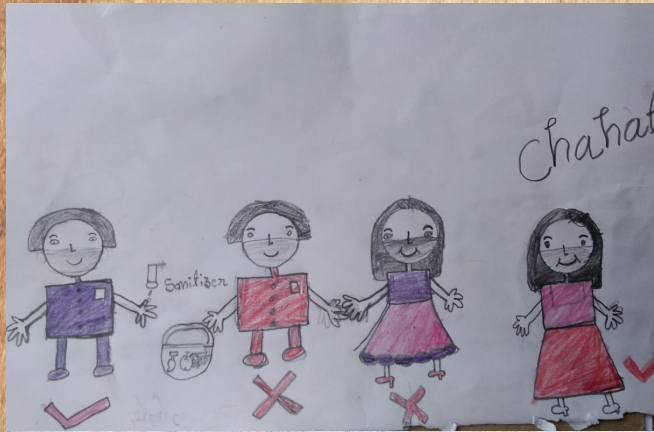
Do's and Don'ts - Art work by Suhana

Do not break the rules in this tough time. Do not step out of your home. Stay home and stay safe - Art work by Bhawana



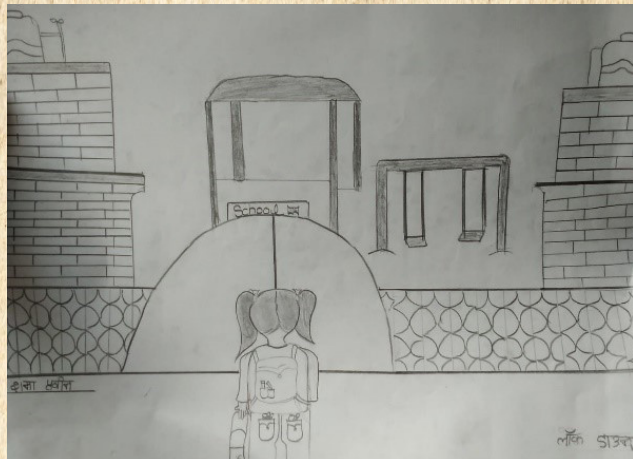
Avoid being in public places and use mask - Art work by Jisbah



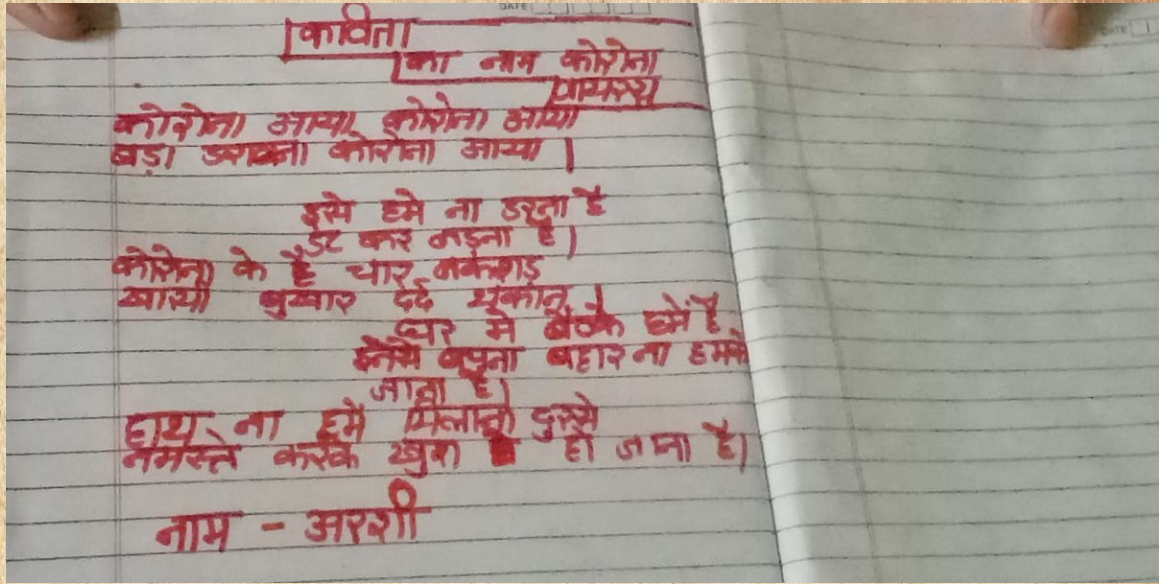


Keep yourself sanitized and make distance from others for everyone's safety
- Art work by Chahat

When everything will be great, then we will definitely go to school again - Art work by Shama Praveen



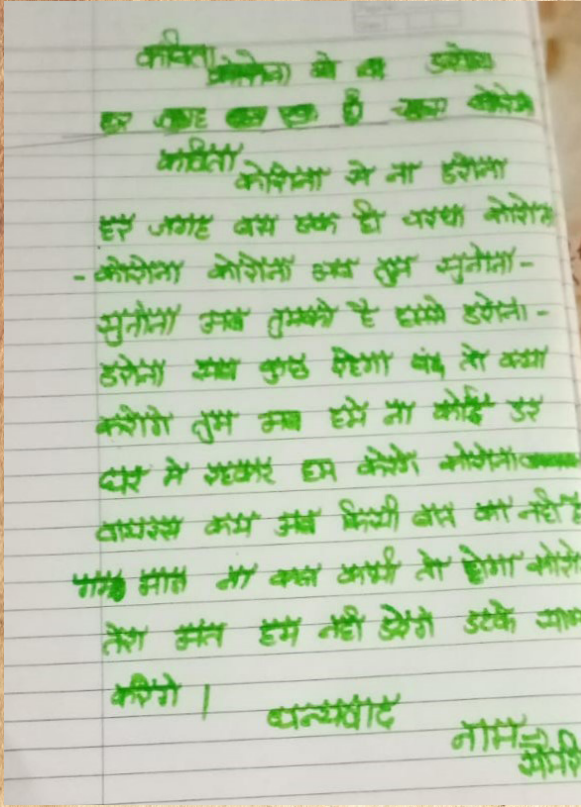
The other side of the lockdown—the side we never wanted to see, and still don't want to see because it has hurt workers' livelihoods and requires more of our attention and effort. - Art work by Mushra.



कोरोना

कोरोना आया, कोरोना आया,
बड़ा डरावना कोरोना आया।
इससे हमें न डरना है,
डट कर डरना है।
कोरोना के हैं चार लक्षण,
खाँसी, बुखार, दर्द, थकान।
घर में बैठके हमें हैं इनसे बचना,
बाहर न हमने जाना है।
हाथ न हमें मिलाना दूर से,
नमस्ते करके खुश हो जाना है।

- अरशी



कोरोना से न डरना

कोरोना से न डरना,
हर जगह बस एक ही चर्चा,
कोरोना, कोरोना, कोरोना।

अब तुम सुनना,
अब तुमको है हैं हमसे डरना।

सब कुछ रहेगा बंद,
तो क्या करोगे तुम,
अब हमें न कोई डर,

घर में रहकर हम करेंगे कोरोना वायरस
कम।

अब किसी बात का नहीं है गम,
आज या कल कभी तो होगा कोरोना तेरा
अंत।

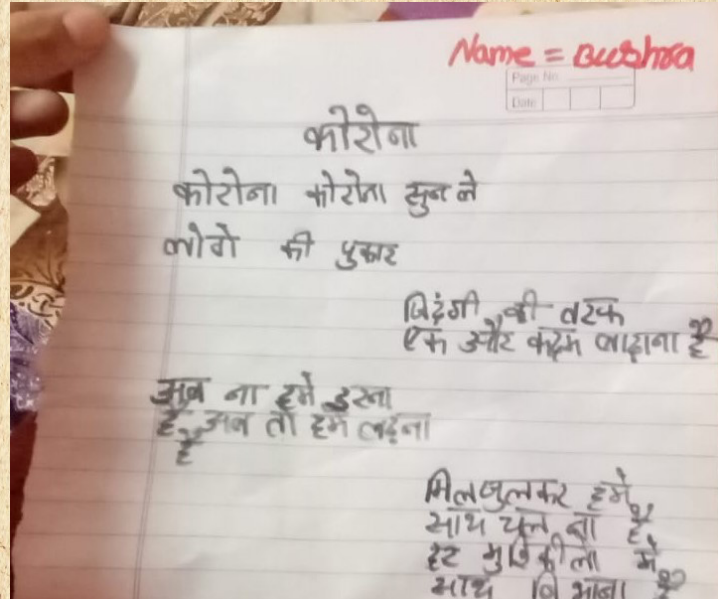
हम नहीं डरेंगे,
डटके सामना करेंगे।

- समरीन

कोरोना

कोरोना कोरोना सुन ले,
लोगों की पुकार।
ज़िन्दगी की तरफ,
एक और कदम बढ़ाना है।
अब न हमें डरना है,
अब तो हमें लड़ना है।
मिलजुल कर हमें
साथ चलना है,
हर मुश्किलों में
साथ निभाना है।

- बुशरा

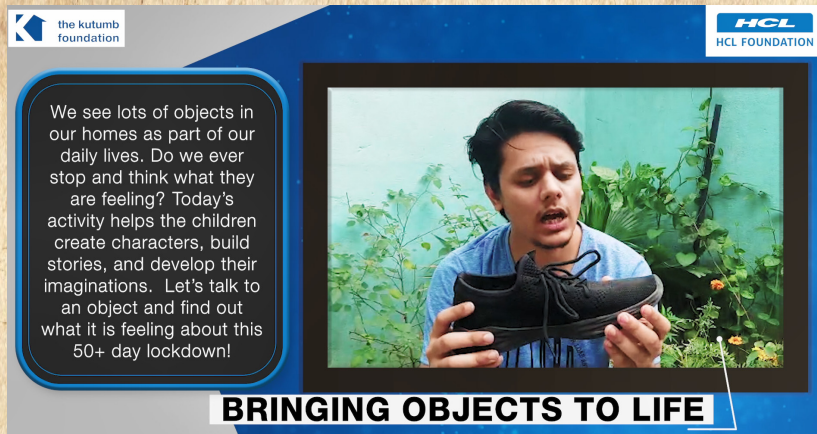


Drama-in-Education

The Kutumb Foundation, in conjunction with HCL Foundation, conducts twice-weekly drama-in-education classes in four Noida government schools. Our strategy is to use drama-in-education conventions as a means to explore the community's relationship with the environment, as per the National Curriculum Framework's EVS Class III-V Guidelines. During the Pandemic, our teachers have worked with their students remotely, creating drama videos, as well as conducting Dhamaa Chaukdi training sessions with NGO educators and government school teachers.



Kutumb's learning objective during the pandemic is to create a safe and engaging environment for the students using drama-in-education strategies. Twice per week, our teachers individually call each of their students, and share video content, materials, etc. over WhatsApp whenever possible. Students share their responses to the homework. We produce two videos, typically eight per month, highlighting the interplay between teachers and students. One video covers an aspect of the lesson (ex. object theatre) and the other features 'anchors' and 'reporters' covering the effects of the pandemic in their communities.



the kutumb foundation

HCL FOUNDATION

We see lots of objects in our homes as part of our daily lives. Do we ever stop and think what they are feeling? Today's activity helps the children create characters, build stories, and develop their imaginations. Let's talk to an object and find out what it is feeling about this 50+ day lockdown!

BRINGING OBJECTS TO LIFE



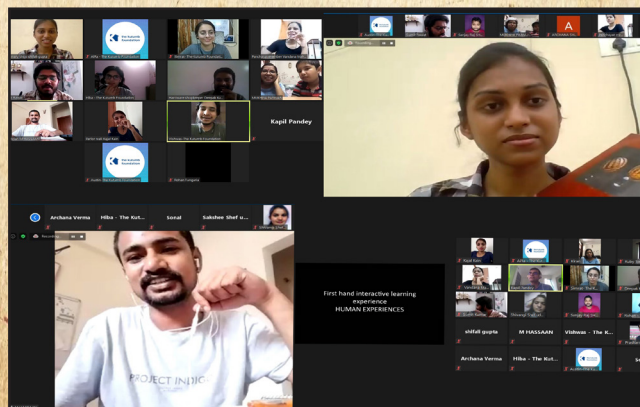
the kutumb foundation

HCL FOUNDATION

Shikha Playing : Ram Laal
Class : 8th
Primary School Sector 12

सूत्रवाई की जीत

SHORTAGE IN FOOD SUPPLY



Kapil Pandey

PROJECT INJIC

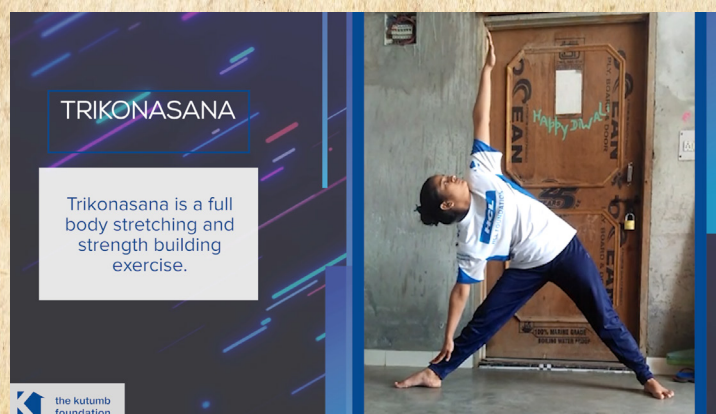
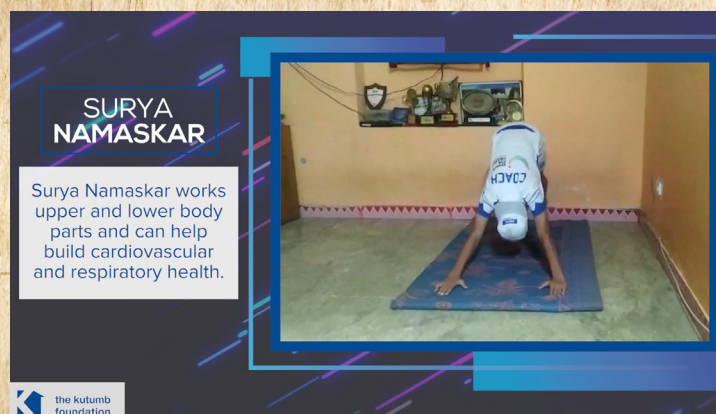
First hand interactive learning
Experience
HUMAN EXPERIENCES

Sports for Change

Kutumb, in collaboration with HCL Foundation, conducts twice weekly football and life skills training sessions with over 60 young men and women from three Noida Inter-Colleges, as part of our Sports for Change intervention. After successfully clearing the Noida Qualifier and UP State Qualifier, these students participated in HCL Foundation's Sports for Change National Championship in Lucknow on 29th and 30th November 2019. The Uttar Pradesh Boys' and Girls' Football teams, trained by Kutumb, took 1st place in the competition. During the Pandemic our coaches have conducted remote workshops with their students, as well as held a series of webinars, Offside Chats.



Each week a workout (cardio/strength training/yoga) was prepared by our coaches, in conjunction with players, as part of our revised remote response to the Covid-19 Pandemic. One of the players then films themselves doing the workout. We then make a video and share the workout. The players send videos of themselves doing each exercise. The coaches score the player on each exercise based on how well they have performed the exercise, as well as on the number of sets/ reps they have completed. A sheet is maintained with a running total score for each player. Winners will be selected based on total number of points, as well as on most improved and most innovative, when the remote engagement is completed.

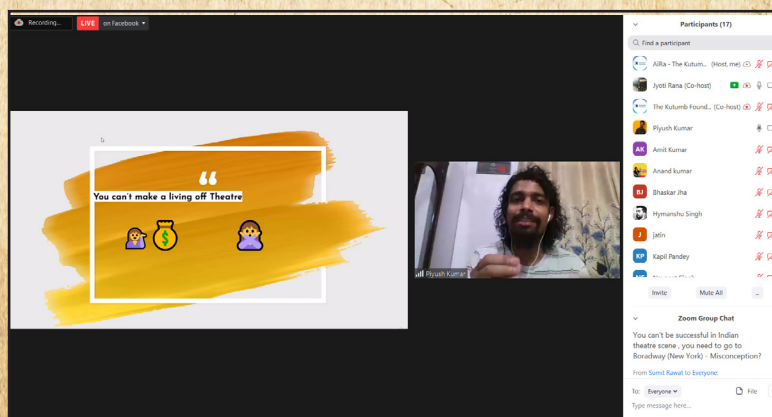
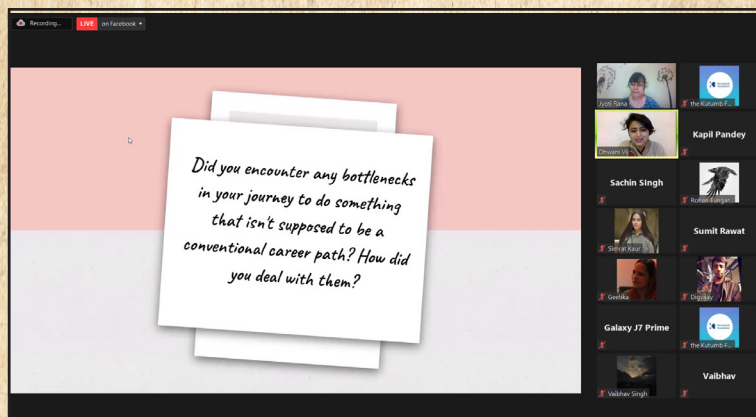


Yuva Kendra

Kutumb, in collaboration with HCL Foundation, conducts twice weekly football and life skills training sessions with over 60 young men and women from three Noida Inter-Colleges, as part of our Sports for Change intervention. After successfully clearing the Noida Qualifier and UP State Qualifier, these students participated in HCL Foundation's Sports for Change National Championship in Lucknow on 29th and 30th November 2019. The Uttar Pradesh Boys' and Girls' Football teams, trained by Kutumb, took 1st place in the competition. During the Pandemic our coaches have conducted remote workshops with their students, as well as held a series of webinars, Offside Chats.



The Theatre Trainer assigns her students homework based on theatre training exercises and calls them 3 times a week for lessons over the phone/on WhatsApp. Lessons have focused on building acting foundations. Videos have been created exploring the ins and outs of drama and theatre.



Goal of Life

Our Goal of Life programme is aimed at building life-skills in disadvantaged children from across Delhi. This programme is one of the Kutumb Foundation's pioneering initiatives.

Today Goal of Life works in four locations across Delhi; all sessions are led by trained community youth and feature an intensive curriculum focusing on leadership, pluralism, gender sensitivity and physical fitness; the toolkit is the culmination of a decade of our best practices. Goal of Life is a sustainable and scalable sports for development programme. This means we use football as a way to attract youth; sport is integrated with our educational and life-skills activities. The objective of Goal of Life is to address the overall physical, emotional, and social development of the child. Our success over the past three years has been due to the support we have received from Toyota Financial Services.



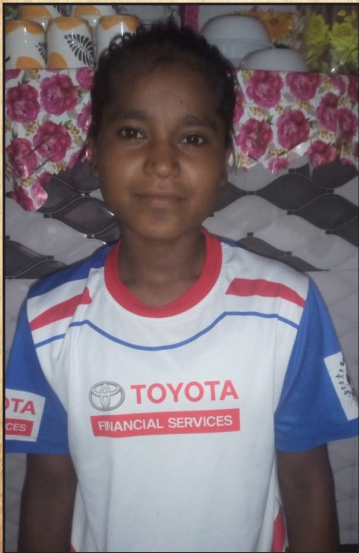


नमस्ते, मेरा नाम आस्मीन है। मुझे फुटबॉल खेलना बहुत ज़्यादा पसंद है। मैं फुटबॉल खेलने जाती हूँ ना तो मुझे बहुत ज़्यादा शर्म आती है क्योंकि मेरी गली के लोग मुझे बहुत बोलते थे कि शॉर्ट निक्कर में बाहर खेलने मत जाया कर, अच्छा नहीं लगता है। इसलिए मुझे बहुत परेशानी होती थी कि, मैं खेलने जाऊँ या नहीं। फिर मैंने अपने खेलने पर फोकस किया और किसी की बात पर गौर नहीं करती थी और बाहर खेलने जाने लगी। मेरे घरवाले भी मुझे खेलने के लिए बोलते हैं। कई बार कुछ लोग या लड़के कमेंट करते थे फिर भड़िया बोलते थे कि कोई भी कुछ बोले मुझे बता देना फिर मैं शॉर्ट निक्कर पहनकर जाने लगी और कोई भी कुछ नहीं बोलता है और ना ही कोई कमेंट करता है। - Aasmin

Hello,

मेरा नाम मुस्कान है। जब मैं खेलने जाती हूँ तो मुझे बहुत सारी परेशानियाँ होती है। जैसे कि मैं शर्ट निकालकर बाहर जाती हूँ तो बाहर के लोग बोलते हैं कि क्या पहन रखा है? शर्म नहीं आती है? तेरे माँ-बाप कुछ सिखाते नहीं है और पड़ोसी यह भी बोलते है कि अपनी लड़की को छोटे कपड़े पहनकर बाहर मत जाने दिया करो। इसीलिए मम्मी भी कभी-कभी मुझे खेलने नहीं जाने देती है फिर मैं अपनी मम्मी को समझाती हूँ कि शर्ट निकालने से कुछ नहीं होता। सब शर्ट निकालकर पहनते हैं और फुटबॉल खेलते हैं। कभी-कभी लड़के भी मेरी शर्ट पर कमेंट करते हैं पर मैं इन लोगो की बातों को नज़र अंदाज़ करके फुटबॉल खेलने निकल जाती हूँ।

- Muskan



सभी को मेरा नमस्कार! मेरा नाम पिंकी है। मैं घेवरा गांव में 'गोल ऑफ़ लाइफ़' प्रोग्राम में खेलने आती हूँ। मैं फुटबॉल बचपन से खेलना चाहती थी परन्तु मुझे मेरे घरवाले डाटेंगे यही सोच कर नहीं खेल पाई लेकिन जब एक दिन मैंने अपने दोस्तों के साथ कुटुंब द्वारा चलाए गए 'गोल ऑफ़ लाइफ़' प्रोग्राम हिस्सा ले लिया और मैं काफ़ी अच्छा खेलने लगी। मैं इतना अच्छा खेलती हूँ कि मेरे कोच ने मुझे 'लीग मैच' के लिए चुन लिया, लेकिन मैं घबरा गई कि अब क्या होगा क्योंकि वहाँ शॉर्ट्स पहनकर जाना था। मुझे लगने लगा कि अब मेरे घरवाले और आस-पड़ोस के लोग मेरे यहाँ आना बंद कर देंगे। फिर मैंने मन में ठान लिया कोई कुछ भी कहे, मुझे इसमें जाना ही है और आगे चलकर अपना करियर इसी में बनाना है और आज वह समय है जब मेरे घरवाले मुझे नहीं रोकते। - Pinki